पोवार(पंवार) समाज के साथ धोखा : कुछ लोगों के झूठ और स्वार्थ के कारण सम्पूर्ण पोवार(पंवार) समाज के इतिहास और संस्कृति के साथ छेड़छाड़ के गलत प्रयास

1. **प्रारंभिक प्रस्ताव और स्व. भोलाराम जी पारधी की प्रतिक्रिया (1961):**

सन 1961 में भोयर समाज का एक प्रतिनिधिमंडल स्व. भोलाराम जी पारधी के निवास ग्राम अतरी में आकर मिला और पंवार समाज के साथ एकता बनाने का प्रस्ताव रखा। इस पर स्व. पारधी जी ने स्पष्ट रूप से कहा कि किसी भी एकीकरण के लिए आवश्यक है कि दोनों समाजों के इतिहास, भाषा और संस्कृति का विस्तृत अध्ययन हो और उस पर व्यापक चर्चा की जाए। यदि इन पहलुओं में साम्य हो तभी एकीकरण पर विचार संभव है।

2. समिति का गठन और रहस्यमयी बैठक:

एक प्रस्ताव सामने आया कि इसके लिए एक समिति बनाई जाए जो उपरोक्त सभी पहलुओं का अध्ययन करके अपनी रिपोर्ट दे, लेकिन न तो कोई समिति बनी और न ही कोई ठोस प्रक्रिया अपनाई गई। इसके विपरीत एक गुप्त बैठक तिरोड़ा से दूर एक छोटे से गाँव मेंढा में की गई, जहाँ तक पहुँचना भी मुश्किल था। केवल वे ही लोग पहुंच सकते तो रहीश थे और अपने लिए साधन की व्यवस्था कर सकते थे। वहाँ चंद लोगों ने यह भ्रम फैलाया कि दोनों जातियों के विलीनीकरण से संख्या बल और राजनीतिक शक्ति बढ़ेगी, परन्तु इस दावे के पीछे कोई ठोस

आंकड़े या जानकारी नहीं थी। क्योंकि उस समय भोयर समाज लगभग देढ़ लाख और पंवार समाज लगभग आठ लाख थे और वो भी न केवल अलग जिलें बल्कि राज्य भी अलग अलग ही थे तो पता नहीं अपनी ऐतिहासिक विरासत के साथ समझौता कर कितनी राजनैतिक ताकत बढ़ गई होगी, कोई बच्चा भी समझ सकता है।

3. बिना विमर्श के प्रस्ताव और असहमति:

इस बैठक में न तो इतिहास-संस्कृति की जांच हुई, न कोई सामाजिक पृष्ठभूमि की चर्चा हुई और न ही व्यापक सहमति बनी। इसके बावजूद दो भिन्न पृष्ठभूमि और संस्कृति की जातियों के विलीनीकरण का प्रस्ताव रखा गया। पंवार महासभा के भी अधिकांश सदस्य इससे सहमत नहीं थे। यह प्रस्ताव जबरन थोपा गया और इस पर समाज की कोई सहमति नहीं थी। इसलिए यह बैठक विवादास्पद रही और कोई वैध निर्णय नहीं हुआ।

4. बुजुर्गोंकी अनदेखी और समाज का विरोध:

पुराने लोगों के अनुसार इस बैठक में कोई भी विलीनीकरण पारित नहीं हुआ, क्योंकि दोनों समाज के लोग इसके पक्ष में नहीं थे। चंद लोगों ने इस गुप्त बैठक में निर्णय लिया और बाकी समाज को जानकारी तक नहीं दी गई। जबकि इस प्रकार के निर्णय समाज की खुली बैठक और सर्वसम्मति से होने चाहिए थे। क्योंकि चार लोग ऐसे सुदूर छोटे से गांव में बैठकर पूरे समाज का निर्णय नहीं ले सकते। जबकि इसके पूर्व कभी

भी किसी भी संस्था में दोनों समाज एक साथ नहीं रहे और न ही पंवार राम मंदिर समिति बैहर, पंवार शिक्षा समिति, पंवार जाती सुधारनी सभा, नूतन पंवार संगठन, मध्यप्रांत एवं बेरार क्षत्रिय पंवार संघ पूरी तरह से पोवार समाज की संस्थाए थी और भोयर समाज निकटवर्ती जिलों के होते हुए भी इनमे शामिल न होना दोनों समाजो के स्वतंत्र अस्तित्व को दर्शाता है।

5. विरोध और महासभा की निष्क्रियता:

इस एकतरफा फैसले के खिलाफ समाज में व्यापक विरोध हुआ। इसके बाद पंवार महासभा लगभग बीस वर्षों तक निष्क्रिय हो गई। इसका उल्लेख 1986 में प्रकाशित भोजपत्र में भी मिलता है। भोयर समाज ने भी इस निर्णय को खारिज किया और 1975 में "अखिल भारतीय भोयर पवार महासंघ" की स्थापना कर ली।

6. पुनः प्रयास और धनबल की भूमिका (1982 से):

1982 में श्री रामू सेठ पवार द्वारा नागपुर में फिर से एकीकरण की कोशिशें की गईं। पोवार समाज ने फिर इसका विरोध किया, परंतु धनबल के कारण कुछ लोगों को जोड़ा गया। सन 2000 के आसपास श्री ज्ञानेश्वर टेंभरे जी "अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा" के अध्यक्ष बने और इनके भोयर समाज से निजी संबंध होने के कारण उन्होंने इस झूठे विलीनीकरण को तेजी से बढ़ाया।

7. नाम परिवर्तन और पंजीयन में हेरफेर:

श्री ज्ञानेश्वर जी टेंभरे ने भोयर समाज द्वारा 1939 में अपनाए गए "पवार" नाम को पूरे पंवार(पोवार) समाज पर थोपना शुरू किया। उन्होंने पुरानी पंवार महासभा के स्थान पर "राष्ट्रीय क्षत्रिय पवार महासभा" के नाम से पंजीयन करवाया और उसमें भोयर समाज को भी कुछ पद दिलवाए। शासन को गलत सूचना दी गई कि पोवार समाज को भोयर पवार नाम से भी जाना जाता है।

8. रोटी-बेटी संबंध और सामाजिक भ्रम:

अपने निजी संबंधों के आधार पर कुछ लोगों ने पंवार और भोयर समाज के बीच रोटी-बेटी के संबंध को बढ़ावा देने के लिए रैलियाँ निकालीं। जो लोग इसका विरोध करते थे उन्हें समाज को तोड़ने वाला घोषित कर दिया गया। इससे समाज में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हुई।

9. सोशल मीडिया और सच्चाई का उजागर होना (2010 के बाद):

2010 के बाद सोशल मीडिया के माध्यम से युवाओं और विद्वानों ने समाज के इतिहास, संस्कृति और नामों पर गंभीरता से विचार करना शुरू किया। तब यह तथ्य सामने आए कि इतिहास के साथ छेड़छाड़ की गई थी और समाज को गलत जानकारी दी जा रही थी।

10. "पवारी ज्ञानदीप" पुस्तक में तथ्यात्मक ग़लतियाँ:

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे द्वारा लिखित "पवारी ज्ञानदीप" पुस्तक में भोयर औरपोवार समाज के एकीकरण को लेकर कई मनगढ़ंत और झूठे तथ्यों का उल्लेख किया गया। उन्होंने दोनों जातियों को एक ही समय पर आगमन बताया जबकि ब्रिटिश गजेट्स और दस्तावेजों में इनके आगमन काल में दो सौ वर्षों का अंतर दर्शाया गया है। जबकि खुद ही इस किताब में लिखा हो दोनों जातियां अलग-अलग क्षेत्रों से आई तो एक कैसे हो गई।

11. ऐतिहासिक दस्तावेज़ों में भिन्नता की पुष्टि:

ब्रिटिश गजेट्स, काका कालेलकर आयोग, मंडल आयोग और जनगणना दस्तावेजों में भोयर और पोवार को अलग-अलग जातियाँ माना गया है और उन्हें भिन्न क्रमांक दिए गए हैं। बावजूद इसके, गलत तथ्यों के आधार पर उन्हें एक ही क्रम में दर्ज करवाने की कोशिश की गई।

12. वर्तमान में ऐतिहासिक पहचान की पुनः स्थापना (2024):

समस्त ऐतिहासिक रिपोर्टों और दस्तावेजों के पुनः अध्ययन के बाद यह स्पष्ट हुआ कि बिना गहन जांच और अध्ययन के दो जातियों को जोड़ने का कार्य एक गंभीर भूल थी। इसलिए सन 2024 के तुमसर अधिवेशन प्रस्ताव में पूर्व में छलपूर्वक किए गए किसी भी विलीनीकरण प्रस्ताव को पूरी तरह अस्वीकार किया गया और पोवार(पंवार) समाज की ऐतिहासिक

पहचान तथा छत्तीस कुलीन स्वरूप को यथावत बनाए रखने का प्रस्ताव पारित किया गया।

13. आज भी जारी भ्रम और स्वार्थपूर्ण प्रचार:

आज भी कुछ लोग पद और स्वार्थ के लालच में बिना असली-नकली पंवार को समझे समाज में झूठे विलीनीकरण प्रस्तावों का प्रचार कर रहे हैं। वे समाज की नई पीढ़ी को गुमराह कर रहे हैं और इतिहास तथा अस्मिता के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। चंद लोगों द्वारा लिखे गए नकली इतिहास और तथ्यहीन बातों के आधार पर पंवार समाज के गौरवशाली अतीत को मिटाने का किसी को अधिकार नहीं है।

पोवार(पंवार) अस्मिता संरक्षण समिति

पोवारी संस्कृति संरक्षण समिति

पंवार (पोवार) क्षत्रिय समाज की अस्मिता पर संकट: नकली पवारों के जबरन विलय के प्रयासों का ऐतिहासिक विश्लेषण

पंवार क्षत्रिय समाज की अस्मिता पर संकट: एक सांस्कृतिक चेतावनी

भारतवर्ष की गौरवशाली परंपराओं में पंवार (Panwar/Powar) क्षत्रिय समाज एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह समाज न केवल अपने शौर्य, पराक्रम और ऐतिहासिक वीरता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी सांस्कृतिक, सामाजिक और कुल परंपराएँ भी अत्यंत समृद्ध और अनुकरणीय रही हैं। विशेष रूप से मालवा अंचल में पंवार समाज की पहचान "36 कुलों" के रूप में सुव्यवस्थित रही है, जो समाज की आंतरिक एकता, अनुशासन और ऐतिहासिक निरंतरता का प्रमाण है।

इतिहास से विरासत तक

पंवार क्षत्रिय समाज की उत्पत्ति और विकास भारतीय इतिहास के गौरवपूर्ण अध्यायों में दर्ज है। राजनैतिक नेतृत्व, सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक योगदान के क्षेत्रों में इस समाज की भूमिका हमेशा अग्रणी रही है। पीढ़ियों से समाज ने अपनी पहचान को न केवल सुरक्षित रखा है, बल्कि उसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

समाज के समक्ष उभरता संकट

किन्तु आज, यह समृद्ध विरासत एक गंभीर संकट के दौर से गुजर रही है। हाल के वर्षों में कुछ ऐसे तत्व समाज के भीतर प्रवेश करने का प्रयास कर रहे हैं, जो मूलतः पंवार नहीं हैं, किंतु स्वयं को "पवार" घोषित कर, प्रस्तावों और कूटनीतिक प्रयासों के माध्यम से पंवार क्षत्रिय समाज में जबरन शामिल होने का प्रयत्न कर रहे हैं।

यह केवल एक सामाजिक चिंता नहीं है, बल्कि समाज की अस्मिता, उसकी ऐतिहासिक पहचान और संस्कृतिक विरासत पर सीधा आघात है। यदि इस प्रवृत्ति को समय रहते नहीं रोका गया, तो समाज की शुद्धता, उसकी परंपरा और पहचान विकृत हो सकती है।

संवेदनशीलता और सजगता की आवश्यकता

आज समय की माँग है कि पंवार समाज के सभी घटक, चाहे वे किसी भी क्षेत्र में हों इस संकट को समझें और एकजुट होकर इसका प्रबल प्रतिरोध करें। समाज की प्रामाणिकता और ऐतिहासिक अखंडता को बनाए रखना हमारा नैतिक, सांस्कृतिक और पीढ़ियों के प्रति उत्तरदायित्व है। पंवार क्षत्रिय समाज का इतिहास केवल गौरव की गाथा नहीं है, बल्कि यह एक प्रेरणा है आत्मगौरव, संगठन, और सांस्कृतिक प्रतिबद्धता की। आज जब यह समाज एक पहचान संबंधी संकट से जूझ रहा है, तब हमें सचेत, संगठित और सक्रिय होने की आवश्यकता है।

इतिहास की रोशनी में पंवार समाज की पहचान

पंवार (या परमार) वंश का उल्लेख भारतीय इतिहास में 9वीं से 13वीं शताब्दी के मध्य उज्जैन, धार और मालवा क्षेत्रों में एक प्रमुख राजवंश के रूप में हुआ है। परमार वंश के शासकों ने न केवल राजनीतिक सत्ता स्थापित की, बल्कि कला, साहित्य और धर्म के क्षेत्र में भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस वंश को अग्निवंशी क्षत्रियों से जोड़ा जाता है, जिनकी उत्पत्ति संबंधी कथाएँ 'प्रबन्धचिंतामणि' और 'कर्णाटक कथा' जैसे प्राचीन ग्रंथों में प्राप्त होती हैं। इन ग्रंथों में अग्निकुंड से उत्पन्न चार राजवंशों में परमारों का उल्लेख प्रमुख रूप से मिलता है, जो इस वंश की प्रतिष्ठा और पौराणिक महत्ता को दर्शाता है।

पंवार समाज के 36 कुलों की व्यवस्था: सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक एकता की आधारशिला

पंवार (पोवार) समाज में प्राचीन काल से 36 कुलों की एक सुव्यवस्थित और मान्य परंपरा रही है। यह कुल-व्यवस्था केवल एक सामाजिक ढांचा नहीं, बल्कि

पंवार समाज की जातीय अखंडता, सांस्कृतिक समरसता और परंपरागत मूल्यों की अभिव्यक्ति का आधार रही है। इन कुलों के माध्यम से समाज में विवाह, उत्सव, धार्मिक अनुष्ठान और अन्य सामाजिक गतिविधियाँ सुनियोजित रूप से संचालित होती आई हैं।

प्रत्येक कुल की अपनी विशिष्ट पहचान होती है। हर कुल के अपने कुलदेवता, कुलदेवी, उपासना पद्धति, रीति-रिवाज और परंपराएँ होती हैं, जिनका समाज के भीतर विशेष महत्व रहा है। इन कुलों की सामाजिक भूमिका भी सुनिश्चित रही है, जो न केवल परंपरागत ज्ञान और सांस्कृतिक उत्तराधिकार को आगे बढ़ाती है, बल्कि समाज के भीतर उत्तरदायित्व और सम्मान की भावना को भी सुदृढ़ करती है।

इस कुल-व्यवस्था का महत्व केवल समाज के संगठन तक सीमित नहीं है। यह व्यवस्था समाज की सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखते हुए उसमें एकरूपता भी स्थापित करती है। यह वह सांस्कृतिक सेतु है, जो पीढ़ियों को उनके अतीत से जोड़ता है और सामाजिक स्थिरता को मजबूत करता है। इसके माध्यम से न केवल सामूहिक पहचान को बल मिलता है, बल्कि समाज बाहरी हस्तक्षेपों और विघटनकारी प्रवृत्तियों से भी सुरक्षित रहता है।

आज जब पंवार (पोवार) समाज अपनी अस्मिता और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए सजग हो रहा है, तब यह कुल-व्यवस्था और भी अधिक प्रासंगिक बन जाती है। इसलिए यह अत्यावश्यक है कि हम इस परंपरा को न केवल जीवित रखें, बल्कि इसका व्यवस्थित दस्तावेजीकरण करें और नवपीढ़ी को इसके महत्व से अवगत कराएँ, ताकि यह अमूल्य विरासत सुरक्षित और सशक्त रूप में आगे बढ़ती रहे।

नकली "पवारों" का जबरन विलय: सामाजिक असंतुलन का षड़यंत्र

वर्तमान समय में कुछ ऐसे तत्व सक्रिय हैं जो न तो ऐतिहासिक रूप से पंवार (पोवार) क्षत्रिय समाज से संबंधित हैं, और न ही जिनकी भाषा, रीति-नीति, पहनावा, पूजा-पद्धति अथवा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पंवार समाज से मेल खाती है। इसके बावजूद, ये लोग केवल 'पवार' उपनाम अथवा कुछ वैवाहिक संबंधों

का सहारा लेकर समाज में जबरन प्रवेश की चेष्टा कर रहे हैं। उनकी यह कोशिश न केवल परंपराओं के विरुद्ध है, बल्कि समाज की मूल संरचना और अस्मिता के लिए एक गंभीर चुनौती भी है।

इन प्रयासों को वैधता दिलाने के लिए ये तत्व समाज के भीतर प्रस्ताव पारित करवाने, संगठनों में दबाव बनाने और संस्थागत स्तर पर अधिकार स्थापित करने जैसे कदम उठा रहे हैं। उनके द्वारा अपनाए जा रहे तरीके सुनियोजित हैं, जिनका अंतिम उद्देश्य समाज की परंपरागत व्यवस्था को कमजोर करना और नकली पहचान को असली के रूप में स्थापित करना है।

इस षड्यंत्र का सबसे घातक पहलू यह है कि ये लोग समाज के युवाओं को झूठे ऐतिहासिक तथ्यों और काल्पनिक कथाओं के माध्यम से भ्रमित कर रहे हैं। वे यह धारणा फैलाने का प्रयास कर रहे हैं कि दोनों समाजों की उत्पत्ति एक ही है और उनके बीच कोई भिन्नता नहीं है। जबकि ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से यह दावा न केवल भ्रामक है, बल्कि पूर्णत: असत्य है। तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट है कि ये तथाकथित "नकली पवार" पंवार क्षत्रिय समाज से किसी भी प्रकार से संबंधित नहीं रहे हैं।

ऐसी परिस्थिति में समाज को सतर्क, एकजुट और जागरूक रहना होगा, ताकि इस तरह के प्रयासों को समय रहते रोका जा सके और समाज की पहचान, गरिमा तथा परंपरागत संरचना को अक्षुण्ण रखा जा सके।

वैवाहिक संबंधों के माध्यम से दबाव की राजनीति: सामाजिक ताने-बाने पर गहराता संकट

वर्तमान समय में कुछ ऐसे तत्वों द्वारा एक सुनियोजित रणनीति अपनाई जा रही है, जिसका उद्देश्य पंवार समाज में जबरन घुसपैठ कर अधिकार प्राप्त करना है। इस रणनीति के अंतर्गत सबसे पहले पंवार समाज के व्यक्तियों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए जाते हैं। यह संबंध स्वाभाविक या पारंपरिक सामाजिक मेल-मिलाप पर आधारित नहीं होते, बल्कि इनमें एक गुप्त उद्देश्य छिपा होता है—इन संबंधों के माध्यम से समाज में प्रवेश पाने का मार्ग प्रशस्त करना।

एक बार वैवाहिक संबंध स्थापित हो जाने के पश्चात, इन संबंधों को आधार बनाकर संबंधित व्यक्ति समाज की परंपरागत संस्थाओं, निर्णय-निर्माण परिषदों तथा संगठनों में स्थान पाने का प्रयास करते हैं। दुर्भाग्यवश, कुछ अवसरों पर यह प्रयास सफल भी हो जाते हैं। ऐसे लोग केवल पद या मान्यता प्राप्त करने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे समाज के वास्तविक इतिहास को तोड़-मरोड़कर पेश करने और झूठे तथा मनगढ़ंत इतिहास को स्थापित करने का षड्यंत्र भी रचते हैं। यह प्रयास न केवल समाज की ऐतिहासिक पहचान के लिए हानिकारक है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों की सांस्कृतिक समझ और सामाजिक एकता को भी भ्रमित कर सकता है।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि कभी-कभी पंवार कुल के कुछ व्यक्ति भी, पारिवारिक या निजी संबंधों के कारण, इस प्रक्रिया में अनजाने सहयोगी बन जाते हैं। वे सामाजिक मूल्यों और ऐतिहासिक तथ्यों की अनदेखी करते हुए इन बाहरी तत्वों को समर्थन देने लगते हैं, जिससे समाज की जड़ें धीरे-धीरे क्षीण होती चली जाती हैं। यह स्थिति न केवल आत्मघाती है, बल्कि दीर्घकालिक दृष्टि से समाज की संरचना और सम्मान दोनों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है।

इसलिए यह आवश्यक है कि समाज इस प्रकार की चालबाजियों के प्रति सतर्क रहे, पारंपरिक मूल्यों की रक्षा करे और सामाजिक संस्थाओं में किसी भी प्रकार की घुसपैठ को तर्क, प्रमाण और ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर ही स्वीकार करे।

संस्कृति का संकट और युवा पीढ़ी का दिशाभ्रम

पंवार समाज का एक बड़ा वर्ग, विशेष रूप से युवा पीढ़ी, वर्तमान समय में एक गहरे संक्रमण काल से गुजर रहा है। यह संक्रमण केवल भौतिक या सामाजिक नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक और बौद्धिक स्तर पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधुनिक संचार माध्यमों की पहुंच और इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध अधकचरी, अप्रमाणित जानकारी ने समाज के युवाओं को भ्रम की स्थिति में डाल दिया है। आधे-अधूरे ऐतिहासिक ज्ञान और गलत प्रस्तुतियों के कारण वे

उन गढ़ी गई कहानियों और नकली तथ्यों के प्रभाव में आकर, अनजाने में ही समाज की मूल संरचना और परंपराओं के विरुद्ध खड़े हो रहे हैं।

इस प्रकार का दिशाभ्रम केवल वैचारिक असंतुलन नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक विरासत पर भी एक गहरा आघात है। जब युवाओं का मार्गदर्शन सत्यान्वेषण और प्रमाणिक इतिहास की बजाय कल्पनाओं और योजनाबद्ध मिथकों से होने लगे, तो समाज की जड़ों को खोखला होने में देर नहीं लगती। यह स्थिति एक गंभीर खतरे की ओर संकेत करती है—समाज के भीतर आंतरिक विभाजन और असली व नकली की पहचान का धुंधला पड़ जाना।

यदि हमने समय रहते अपने युवाओं को पंवार समाज के प्रामाणिक इतिहास, उसकी सांस्कृतिक परंपराओं और वास्तविक पहचान से भलीभांति अवगत नहीं कराया, तो आने वाली पीढ़ियाँ नकली पहचान और झूठे इतिहास को ही सत्य मान लेंगी। इसका परिणाम यह होगा कि समाज की वास्तविक अस्मिता धीरे-धीरे लुप्त हो जाएगी, और हम अपनी जड़ों से कटते चले जाएंगे।

अतः यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम अपने युवाओं तक तथ्यपरक जानकारी पहुँचाएं, उन्हें इतिहास की प्रमाणिकता से जोड़ें, और सांस्कृतिक गौरव की भावना को जागृत करें। केवल इसी मार्ग से हम समाज की एकता, अस्मिता और भविष्य को सुरक्षित रख सकते हैं।

1. नकली तत्वों की पहचान और सामाजिक मर्यादा की रक्षा

समाज की सभी संस्थाओं, संगठनों और पंचायतों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे ऐसे व्यक्तियों की पहचान करें जो केवल उपनाम या वैवाहिक संबंधों के आधार पर समाज में प्रवेश करने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे तत्वों को समाज की परंपरागत मर्यादा और पवित्रता को भंग करने से रोका जाना चाहिए।

2. युवा पीढ़ी को ऐतिहासिक चेतना से जोड़ना

समाज के युवाओं को भ्रम से बचाने के लिए उनके सामने प्रमाणिक इतिहास, संस्कृति और पहचान प्रस्तुत करना अत्यावश्यक है। इसके लिए शैक्षणिक सामग्री, शोध लेख, व्याख्यान, संगोष्ठियाँ एवं सेमिनारों का आयोजन नियमित रूप से किया जाना चाहिए, जिससे वे समाज की वास्तविक परंपराओं से अवगत हो सकें।

3. कुल परंपराओं एवं सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण

पंवार (पोवार) समाज की प्राचीन कुल परंपराओं, रीति-रिवाजों, पूजा-पद्धतियों, व्रत-पर्वों और देवी-देवताओं के प्रति आस्था को सहेजने और संरक्षित करने की दिशा में ठोस योजना बनाई जानी चाहिए। साथ ही, इन परंपराओं का दस्तावेजीकरण एवं पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरण सुनियोजित ढंग से किया जाना चाहिए।

4. लोकतांत्रिक और वैधानिक तरीकों से षड्यंत्रों का प्रतिकार

जो संगठन या प्रस्ताव समाज में जबरन घुसपैठ का माध्यम बन रहे हैं, उनका प्रतिकार केवल भावनात्मक रूप से नहीं, बल्कि वैधानिक और लोकतांत्रिक ढंग से किया जाना चाहिए। समाज को कानून और संविधान के दायरे में रहकर अपने अधिकारों और अस्मिता की रक्षा करनी चाहिए।

पंवार (पोवार) समाज को वर्तमान चुनौतियों का सामना एकजुटता, जागरूकता और विवेक के साथ करना होगा। केवल एक सशक्त, संगठित और सांस्कृतिक रूप से जागरूक समाज ही अपने ऐतिहासिक गौरव को बचा सकता है और आने वाली पीढ़ियों को एक सशक्त पहचान सौंप सकता है।

पंवार (पोवार) समाज की अस्मिता, उसकी ऐतिहासिक गरिमा और सामाजिक प्रतिष्ठा किसी तात्कालिक प्रस्ताव, बाहरी दबाव या कृत्रिम प्रयासों से नहीं तय होती। इसका निर्धारण समाज की उस प्रमाणिक ऐतिहासिक विरासत, समृद्ध

परंपरा, और सांस्कृतिक एकरूपता से होता है, जिसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी श्रद्धा, बलिदान और निष्ठा के साथ संजोया गया है।

आज जिन तथाकथित "नकली पवारों" द्वारा समाज में जबरन विलय की चेष्टाएँ की जा रही हैं, वे न केवल पंवार समाज की मूल पहचान को विकृत करने का प्रयास हैं, बल्कि इससे समाज के भीतर भ्रम, विघटन और असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। यह प्रक्रिया सामाजिक समरसता को खोखला करने वाली है और यदि समय रहते इस पर प्रभावी नियंत्रण नहीं किया गया, तो इसका दूरगामी प्रभाव आने वाली पीढ़ियों की मानसिकता और पहचान पर पड़ेगा।

इसलिए यह समय भावनात्मक प्रतिक्रिया का नहीं, बल्कि ठोस, संगठित और विवेकपूर्ण प्रतिकार का है। सम्पूर्ण पंवार (पोवार) समाज को चाहिए कि वह इन षड्यंत्रों का विरोध केवल भावना के आधार पर नहीं, बल्कि तथ्यों, प्रमाणों और अपने सांस्कृतिक बोध के आधार पर करे। हमें एकजुट होकर, लोकतांत्रिक और वैधानिक तरीकों से इस समाजघाती प्रवृत्ति का प्रतिरोध करना होगा।

सिर्फ तभी हम यह सुनिश्चित कर पाएँगे कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ उस *असली पंवार क्षत्रिय समाज* की पहचान, गौरव और संस्कृति को न केवल पहचानें, बल्कि गर्व के साथ उसका संरक्षण और संवर्धन भी करें। यह हमारी ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी है, और समय की पुकार भी।

पोवार(पंवार) अस्मिता संरक्षण समिति